रिकार्ड:- तूने रात गँवाई सो के.... ओम शान्ति प्रातःक्लास 22-3-67

यों यह गीता है भक्ति मार्ग की। सारी दुनियाँ में जो गीता गाते हैं वो शास्त्र पढ़ते हैं तीर्थों पर जाते हैं यह सभी है भक्तिमार्ग की। ज्ञान मार्ग किसको कहा जाता भक्ति मार्ग किसको कहा जाता है यह तुम बच्चे ही जानते हो। वेद शास्त्र उपनिषद आदि यह सब है भक्ति। आधा कल्प भक्ति चलती है। और आधा कल्प फिर ज्ञान की प्रारब्ध मिलती है। भक्ति करते-2 उतरना ही है। उसको कहा जाता है उतरती कला। 84 जन्म लेने पड़ते हैं। फिर एक जन्म में तुम्हारी चढ़ती कला होती है। इसको कहा जाता है ज्ञान मार्ग। ज्ञान के लिये गाया हुआ है एक सेकेण्ड में जीवन मुक्ति। रावण राज्य जो कि द्वापुर से चलता आता है वो खत्म होकर फिर रामराज्य स्थापित होता है। यह ड्रामा में 84 जन्म पूरे हैं। फिर चढ़ती कला से सबका भला होता है। यह अक्षर कहाँ कहाँ किसी शास्त्र में है। सबकी चढ़ती कला सर्व का भला। सर्व की सद्गति करने वाला तो एक है बाप है ना। सन्यासी उदासी तो अनेक प्रकार के हैं। बहुत मत मतान्तर हैं शास्त्रों में लिखा हुआ है कि कल्प की आयु लाखों वर्षों की है। अब शंकराचार्य की मत निकली 10000 वर्ष। कितना फर्क हो जाता है। कोई फिर कहेंगे इतने हजार वर्ष। अनेक मनुष्य, अनेक धर्म, अनेक मतें हैं। सतयुग में होती ही है एक मत। यह बाप बैठ तुम बच्चों को सृष्टि की आदि मध्य अन्त की नालेज देते हैं। इस सुनाने में भी कितना समय लगता है। सुनाते ही रहते हैं। ऐसे नहीं कह सकते हैं कि पहले क्यों नहीं यह सब सुनाया। स्कूल में पढ़ाई नम्बरवार होती है ना। छोटे बच्चे के आर्गन्स छोटे हैं तो उस को थोड़ा सिखाया जाता है। फिर जैसे-2 आर्गन्स बड़े होते जावेंगे तो बुद्धि का ताला खुलता जावेगा। पढ़ाई बढ़ाते जावेंगे। छोटे बच्चे की बुद्धि में तो कुछ धारण हो नहीं सकता है। बड़ा होता है तो फिर वो में पैदा होकर जब आप बन जाता है। इसमें भी ऐसे ही है। कोई की बुद्धि में धारण अच्छी रीति होता है। बाप कहते हैं मैं आया हूँ पतित से पावन बनाने। तो अब पतित दुनियाँ से वैराग होना चाहिये। अगर पावन बनें तो पतित दुनियाँ में रह ही ना सकें। पावन दुनियाँ में मनुष्य भी पावन हैं। पतित दुनियाँ में पतित मनुष्य ही रहते हैं। यह है ही रावण राज्य। यथा राजा रानी.... यह सारा ज्ञान है बुद्धि से समझने का। सबको शंकराचार्य को मान देकर ऊपर में बिठाया है। बुद्धि में यह ख्याल है कि हम पतित सब हैं। यौवनों है तो ऐसे मिसल। क्यों कि बाप से उनकी विपरीत बुद्धि है। अर्थात दुश्मनी बुद्धि है। कहते परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं। उल्टी ही बात बोल देते हैं तो विप्रीत बुद्धि हुई ना। इस समय सबकी है बाप से विप्रीत बुद्धि। तुम बच्चे तो बाप को याद करते हो। अन्दर में बाप के लिये प्यार भी है। आत्मा में बाप के लिये प्यार रिगार्ड है। क्यों कि अब बाप को जाना है पहचाना है। बाबा ने कल भी समझाया है कि सोचकर कर लिखना चाहिये कि वो तो कृष्णोवाच गीता है। यह शिव भगवानोवाच गीता है। कृष्ण की बनाई हुई गीता से नर्कवासी बनाती है। शिव के द्वारा सुनी हुई गीता से स्वर्गवासी बनते हैं। वो गीता गाई जाती है यहाँ पर तुम सम्मुख शिव बाबा से सुन रहे हो। तुमको पहले दोनों का आक्यूपेशन अलग-2 लिखना चाहिये। कृष्ण की महिमा और शिव की महिमा अलग-2, बाबा वाणियों में ढेर युक्तियाँ देते रहते हैं। चित्र बनाने वाले सुनते तो हैं। अगर सुनेंगे ही नहीं तो वो चित्र बना कैसे सकेंगे? तो शिव बाबा की भी फुल महिमा लिखावो मनुष्य सृष्टि का बीज रूप, ज्ञान का सागर प्रेम का सागर। आनन्द का सागर, लिख कर फिर आपस में सब मिल कर देखो कि सारी महिमा आ गई है? कृष्ण की और शिव की अलग-2 लिखो। इस गीता पर शिव का चित्र उस पर कृष्ण का चित्र हो। ज्ञानसागर गीता ज्ञान दाता त्रिमूर्ती शिव परमात्माय नमः। त्रिमूर्ती अक्षर जरूर डालना है। क्यों कि त्रिमूर्ती का तो ज्ञान है ना ब्रह्मा द्वारा स्थापना, तो जरूर फिर ब्रह्मा द्वारा ही ज्ञान सुनावेंगे ना। कृष्ण तो ऐसे नहीं नहीं कहेंगे ना कि शिव भगवानोवाच। कृष्ण से भी कुछ होता नहीं है। तो उनमें शिव बाबा की प्रवेशता ही हो सकती है। शिव बाबा तो प्यारे तो मैं हूँ ही। ऐसे तो कृष्ण का रूप है ना। तो दोनों की महिमा

अलग-2 हो। शिव बाबा की गीता से सदगति। दोनो मिलायें बैंड़ पर बनाओ। बहुत बड़ा बैंड हो। ... कि मुख्य बात ही यह है। सबसे बड़ा बैंड़ इसका होना चाहिये। सतयुग में गीता तो कोई पढ़ते ही नही हैं। भक्ति मार्ग में जन्मजन्मान्तर पढ़ते है तो फिर ज्ञान मार्ग में भक्ति होती नही है। भक्ति मार्ग में जो भी शास्त्र है वो तो वो ही पढ़ते और जानते है। यह ज्ञान की है बिल्कुल नई बात। वो शास्त्र है अनेक प्रकार की। यह है ज्ञान। जिसके लिये तो वो कहते है कि रचता और रचना के ज्ञान को हम नही जानते है। शास्त्रों में भी तो लिखा हुआ है कि ऋषी मुनी आद सब नेती-2 करते ही गये है। अब तुम बच्चों को बाबा बता रहे है। भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते-2 गिरते हो आये है। भक्ति मार्ग में ज्ञान की बात होती ही नही है। अब रचता बाप ही रचना की आदमध्य अन्त का ज्ञान देते है। मनुष्य तो रचता हो नही सकते है। मनुष्य कह नही सकते है कि मै रचता हूँ। बाप खुद कहते है कि मै सृष्टी का बीज रूप हूँ। मै ज्ञान का सागर प्रेम का सागर सर्व की सदगति दाता हूँ। कृष्ण की तो महिमा ही अलग है। तो भी पूरा कन्ट्रास्ट लिखना चाहिये। वो इनकी महिमा यह इनकी महिमा। ऐसा बनाना चाहिये जो कि मनुष्य देखने से ही समझ जावे कि गीता का ज्ञान दाता कृष्ण नही है। इस बात को ही सिद्ध कर तो देखो। तब तीसुन्दरी जीत पहन लो। एक गीता झूठी सिद्ध करने से सब शास्त्र झूठे हो जाते है। इसलिये गाया जाता है झूठ मिट्टी झूठ सिवाय ज्ञान की बातों के सब झूठ ही है। शास्त्रों में है ही सब भक्ति की बातें। कृष्ण के पिछाड़ी कितने हैरान होते है। जैसे शिव के भक्त शिव पर गला काटने को तैयार हो जाते है। वह उनको तो शिव पास ही जाना है। मनुष्य कृ= वैसे ही वो समझते कि हमको तो कृष्ण पास जाना है तो आ नही सकते है। कृष्ण पर बलि चढ़ने की बात नही होती है। देवियों पर बलि चढ़ते है। देवताओं पर कब बलि नही चढ़ते। देवियों पर बलि चढ़ते है। तुम देवियाँ हो ना। तुम शिव बाबा के बने हो। तुम ... खुदा पर ही बलि चढ़ते हो। देवियों पर ही बलि चढ़ते है। शास्त्रों में तो सिर्फ बातें लिख दी है। तुम तो शिव बाबा के बच्चे हो। तन, मन, धन से बलि चढ़ते हो। और कोई बात नही। इसलिये शिव और देवियों पर बलि चढ़ते है। अभी सरकार ने शिव काशी में बल चढ़ना बन्द कर दिया है। अभी तो कोई जानता ही नही है। ... अलग बात करने लिये तो मनुष्य बहुत उपाय लेते है। और अपने साथ शत्रुता करने के अनेक उपाय है। मित्रता का एक ही उपाय हड़ है जो कि बाप बताते है। भक्ति मार्ग में जीवात्मा अपना ही शत्रु है। ज्ञान मार्ग में जीवात्मा अपना ही मित्र है। बाप आकर ज्ञान देते है तो जीवात्मा अपना शत्रु है। जब आकर बाप ज्ञान देते है तो जीवात्मा अपना मित्र बनती है। आत्मा प्रतिज्ञा कर बाप से वर्सा लेती है। संगम युग पर हर एक आत्मा को बाप आकर मित्र बनाते है। आत्मा अपनी मित्र बनती है। श्रीमत मिली है तो हम समझते है कि बाप की मत पर ही चलेंगे। अपनी मति पर आधा कल्प चल कर दुर्गति को पाया है। अभी श्रीमत पर चलकर सदगति को पाना है। तो इसमें अपनी ही मत चल नही सकती है। बाप तो सिर्फ मत देते है कि तुम देवता बनने आये हो ना। यहाँ अच्छा कर्म करेंगे तो दूसरे जन्म में भी अच्छा फल मिलेगा। अमरलोक में। यह तो है मृत्यु लोक। यह राज भी तुम बच्चे ही जानते हो। सो भी तो नम्बरवार ही जानते है। कोई की बुधी में अच्छी रीती धारन होती है। कोई धारन नही कर सकते है तो इसमें टीचर क्या करेंगे। टीचर से कृपा वा आशीर्वाद मांगेंगे क्या। टीचर तो पढ़ा कर अपने घर चले जाते है। स्कूल में पहले-2 आकर खुदा की बन्दगी करते है कि खुदा इनको पास करना तो हम भोग लगावेंगे। टीचर को कब नही कहेंगे कि आशीर्वाद करो। इस समय यह बाप भी है और टीचर भी है। बाप की आशीर्वाद तो बहुत रहती ही है ना। बाप बच्चे को चाहते है। बच्चा आवे तो उनको धन देवें। तो यह आशीर्वाद ही हुई ना। यह एक कायदा है। बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है। अच्छी सम्भाल भी होती रहती है। बाप जैसे बच्चे को भी अब तो तमोप्रधान बनाते जाते है।

तत भी तमोप्रधान दुःख देने वाले है। यह है ही दुःखधाम। 40हजार वर्ष अभी भी बाकी आयु हो तो क्या हाल होगा। मनुष्यों की बुधी बिलकुल ही जैसे कि मारी गई है। बाप के साथ योग रावे तो आत्मा मे रोशनी भी आवे। अयोग में नौ ..... कारपकी .... हो गया है। इसीलिये बाप कहते है जितना याद में रहेंगे उतनी ही लाईट बढ़ती जावेगी। जैसे पैंट्रोल का निशान रहता है नाँ। यह भी ऐसे है। याद से आत्मा प्योअर बनती है। लाईट बढ़ती जाती है। याद ही नही करेंगे तो लाईट भी तो मिलेगी नही। याद से लाईट बुधी को पावेगी। याद नो किया और कोई विकर्म कर लिया तो लाईट कम होती जावेगी। तुम पुरुषार्थ करते हो सतोप्रधान बनने का। यह बहुत समझने की बाते है। याद से ही तुम्हारी आत्मा पवित्र होती जावेगी। तुम लिख भी सकते हो यह रचता और रचना का ज्ञान श्रीकृष्ण दे नही सकते है। उसमे ज्ञान है ही नही। वो तो है प्रारब्ध। कृष्ण तो पूरे 84जन्म लेते है। यह भी लगा देना चाहिये कि अन्तिम84वे जन्म में कृष्ण फिर से ज्ञान ले रहे है। फिर पहला नम्बर मे जाते है। बाप ने यह भी बताया है कि सतयुग मे 9लाख ही होंगे तो फिर बुधी तो होगी ही नाँ। दास-दासियाँ भी ..... ही होंगी नाँ। जो पूरे 84 जन्म लेते है। कहेंगे इन्होंने पूरे 84जन्म लिये है। 84जन्म ही गिने जाते है। जो अच्छी रीती परीक्षा पास करेंगे वो तो पहले-2 ही आयेंगे। जितना देरी से जावेंगे तो मकान को पुराना तो कहेंगे नाँ। नया मकान बनता है फिर दिन प्रति दिन आयु कम होती जावेगी। कोई नया मकान बनावे तो कहेंगे कि 2, 3 सो वर्ष तक चलेगा। आखरीन वो मकान तो सड़ जाता है नाँ। वहाँ तो सोने के महल बनते है। वो तो पुराना हो नही सकता है। सोना तो सदैव ही चमकता होगा। फिर भी साफ जरूर करना पड़ेगा। जेवर भल सच्चे सोने का बनाओ आखिर भी साफ करना पड़ ही जाता है। फिर उनको पालिश चाहिये। तुम बच्चे को सदैव यही खुशी होनी चाहिये कि हम तो नई दुनियाँ मे जा रहे है। इस नर्क मे यह अन्तिम जन्म है। ~~तन, आत्मा दोनो~~ कुछ देखते हो जानते हो कि यह पुरानी दुनियाँ पुराना शरीर है। अभी हमको सतयुग नई दुनियाँ मे नया शरीर लेना है। 5तत्व भी नये होते है। ऐसे-2 अन्दर विचार सागर मन्थन चलना चाहिये। यह पढ़ाई है नाँ। अन्त तक तुम्हारी यह पढ़ाई चलेगी। पढ़ाई बन्द हुई तो विनाश हो जावेगा। तुमको स्टुडन्ट अपने को समझ कर उसी खुशी मे रहना चाहिये नाँ। भगवान हमको पढ़ाते है। यह खुशी कोई कम थोड़ेई है। परन्तु यह भी जानते हो कि साथ-2 माया भी उल्टा काम करवा देती है। 5, 6 वर्ष पवित्र रहते है फिर माया पटर मे डाल देती है। गन्दा कर देती है। एक बार गिरे तो फिर वो अवस्था हो नही सकती है। हम गिरा हूँ फिर वो बार-2अन्दर मे आता है। अभी तुम बच्चों को सच्ची खुशी रखनी है। इसजन्म मे जो पाप किये है हर एक आत्मा को अपने जीवन का तो पता ही है नाँ। कोई मंद बुधी कोई विशाल बुधी होते है। छोटेपन की सारी याद तो रहती है नाँ। बाबा भी तो छोटेपन की ही हिस्ट्री सुनाते है नाँ। बुधी मे याद आती है नाँ। बाबा को वो जगह आद भी याद है। परन्तु अभी तो वहा सब नई ही जगह बन गई होगी। 5वर्ष से लेकर अपनी जीवन कहानी याद होनी चाहिये। अगर भूल गये है तो डल बुधी कहेंगे। बाबा कहते है कि अपनी जीवन कहानी लिखो। लाईफ की बात है नाँ। मालुम पड़ता है कि यह लाईफ मे कितना चमत्कारी था। गाँधी नेहरू आद के कितने बड़े-2 वैल्यूम बनते है। लाईफ तो वास्तव मे तुम्हारी वैल्युबुल है नाँ। तुम लोगो के आगे तो और कोई की भी लाईफ वर्थ नाट अपेनी है। तुम्हारी नजर मे तो वो कोई लाईफ ही नही है। वण्डरफुल लाईफ यह है। यह है मोस्ट वैल्युबुल। अमूल्य जीवन। इसकी वैल्यु कही नही जा सकती है। इस समय तुम बहुत सर्विस करते हो। यह ल-न तो कुछ भी सर्विस नही करते है। तुम्हारी लाईफ बहुत वैल्युबुल है। जबकि औरों की भी ऐसी जीवन बनाने सर्विस करते हो। वो गायन लायक होती है। वैष्णव देवी का भी मन्दिर है नाँ। अभी तुम सब वैष्णव हो। मनुष्यों की तो यह भी बुधी नही चलती है कि सिर्फ एक ही वैष्णव

देती होगी क्या। वैष्णव माना कि तुम पवित्र बनते हो। खान-पान भी वैष्णव है। पहले नम्बर विष्णु भी तो तुम वैष्णव ही ना। जगत-अम्बा की यह सब [illegible] बच्चियाँ [illegible] है ना। ब्रह्मा और सरस्वती। बाकी है सब उनकी सन्तान। नम्बरवार कुछ देवियाँ भी है। जिनकी पूजा होती है। बाकी इतनी भुजायें आदि जो दी है वो सब है मनसुत। तुम सहुली को आप समान बनाती हो तो भुजायें दे दी है। ब्रह्मा को भी 100 भुजायें बता [illegible] बाला दिखाते है। यह सब भक्ति मार्ग की बातें समझाई जाती है। फिर बाप कहते है कि देवीयुग भी पालन करने है। किसको भी [illegible] नहीं थी। उल्टा सुल्टा रास्ता बता कर सत्यानाश नहीं करो। [illegible] को भी एक ही मुख्य बात समझानी चाहिये कि बाप और वर्से को याद करो। वैज पर समझाओ। [illegible] समझाया है कि मैं कहती को समझाओ। वो मिलेंगी मन्दिरों में। शिव के मन्दिर में। [illegible] कृष्ण के मन्दिर में। बहुत तुमको वहाँ ही मिलेगी। तुम जानते हो कि आप ही पूज्य आप ही पुजारी बने थी। पुजारी ही फिर पूज्य होंगे। आदी देव के मन्दिर में भी तुम समझा सकते हो। पूछना कि यह प्रजापिता ब्रह्मा है तो प्रजा कहाँ है? तुम ब्र, कु, कु, अब [illegible] में है। वो ब्राह्मण थोड़े है कि प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान है। जो कहेंगे ब्रह्मा थोड़ेही मर गया है। तुम तो कहेंगे शिव बाबा और ब्रह्मा दादा अभी हाजिर है। अजमेर में भी ब्रह्मा के मन्दिर में तुम अच्छी रीती समझा सकते हो। प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ है जिनकी कि तुम सन्तान हो। तुम तो भिखारी हो। वो तो निरविकारी है जिनके नाम [illegible] दे रहे है। शिव बाबा ने रुद्र यज्ञ रचा है। ब्राह्मणों को पढ़ाते है। तुम्हारे पास प्रदर्शनी में भी बहुत आवेंगे। मन्दिरों में भी बहुत सर्विस हो सकती है। परन्तु मन्दिरों में सर्विस करने लिये कोई जल्द नहीं है। मन्दिरों में जाकर की गई सर्विस का बाबा को समाचार लिखना चाहिये फिर बाबा भी [illegible] में समझावें तो रहे ना। सर्विस की [illegible] बहुत है। [illegible] बुद्धि भी कोई देते है। वैज पर भी [illegible] चाहिये। प्रजापिता ब्रह्मा है तो जरूर मनुष्य ही होगा ना। परमपिता परमात्मा ने ब्र, वि, शं को रचा। तुम बच्चे जानते हो कि [illegible] तुम [illegible] दे रहे हो स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। यह बातें सब बच्चे तो अच्छी रीती समझा नहीं सकेंगे। बाबा जानते है कि बहुत कुछ दुवी [illegible] सर्विस करनी कहाँ की और नां करने वालों की [illegible] तो हो जाती है ना। बाबा तो जानते है ना। जो कि पूरी सर्विस नहीं करते है उनकी। यो तो और ही ब्र, कु, कु की आबरू गवाँवेंगे। कोई कहते है हम [illegible] पर ऊँचे नहीं रहेंगे, इस सैन्टर पर रहेंगे इस पर नहीं। तो भी बाबा समझ जाते है कि डल बुद्धि है। बच्चों को तो [illegible] जहाँ पर सर्विस मिले वहाँ पर ही लग जाना चाहिये। सैन्टर छोड़ कर और [illegible] तो क्या तुकड़े किया होरे हो जावेंगे। आपस में ही क्लास नहीं चला सकते हैं तो बाकी क्या तो सीखा और क्या किया। विघ्न भी अनेक प्रकार के पड़ते है ना। अबलाओं पर कितने प्रकार के अत्याचार शिव के लिये होते रहते है। यह भी गाया हुआ है। हर एक बात में बड़ी समझ चाहिये। तुम कोई को भी खुदा का परिचय देकर काम निकाल सकते हो। खुदा है ऊँच ते ऊँच। उनको ही पतित पावन रहम दिल कहा जाता है। वो ही बहिश्त में ले जाने वाला है। वो अल्लाह कहते है मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आ जावेंगे। इस दुनिया से छूटने के लिये ही अल्लाह को याद करते है। सतयुग में तो जो अल्लाह की स्थापना है वो तो अल्लाह को याद ही नहीं करते है। यहाँ शैतानी राज्य में सब अल्लाह को याद करते है। उल्टा ही रास्ता बताने वाले नम्बरवन शैतान है। सदगति करने वाले भगवान के लिये कह देते है कि कुत्ते बिल्ले सब में परमात्मा है। तो उल्टा ही तो रास्ता बताते है ना। इसलिये ही उनका नाम [illegible] रखा है। यह सब बातें बाप बैठ समझाते है। कुमी में भी नम्बरवार ही बैठता भी है। जो समझते होंगे वो तो फिर दूसरों को भी समझावेंगे। ओम